• बाल कविता...

आंखें खोलो

अब तो खुश हो
ले आए हम ढेर खिलौने
चंचल गुड़िया, नटखट बौने,
बौनों के संग-संग मृगछौने-
अब तो खुश हो गुड़िया रानी?
बोलो, खुश हो गुड़िया रानी!
लो यह हाथी, बड़े मजे से
दोनों कान हिलाता,
यह घोड़ा बटन दबाते
दुलकी चाल दिखाता।
यह बंदर जो चढ़ा पेड़ पर
खों-खों खूब डराता,
उछल-उछलकर दो पैरों पर
भालू नाच दिखाता।
ले लो, ले लो सभी खिलौने
अजी, मिठाई के ये दोने,
सभी एक से एक सलोने-
अब तो खुश हो गुड़िया रानी?
बोलो, खुश हो गुड़िया रानी!
दूर देश से आई नौका
छुक-छुक-छुक पानी पर,
लो यह इंजन धुआं उड़ाता
दौड़ रहा पटरी पर।
प्यारा-सा शाहजादा भी है
मोर मुकुट इक पहने,
छम-छम परियों के झिलमिल हैं
गहने, सुंदर गहने।
धनुष-बाण, गुल्लक, गुब्बारे
पीं-पीं सीटी, चंदा-तारे,
ले लो तुम सारे के सारे!
ले लो परियां, लो ये बौने-
अब तो खुश हो गुड़िया रानी?
बोलो, खुश हो गुड़िया रानी!

■ प्रकाश मनु

• चुटकुला...

बिना टिकट यात्रा करने के जुर्म में बंगाली बाबा को टिकट चेकर ने पक? लिया...और फिर...

टिकट चेकर- टिकट दिखाएं, बाबा?
बाबा- नहीं है।
टिकट चेकर- जाना किधर है?
बाबा- जहां मर्यादा पुरषोत्तम भगवान श्रीराम का जन्म हुआ है।
टिकट चेकर- चलिए, अब मैं आपको पहुंचा देता हूं
बाबा- कहां?
टिकट चेकर- जहां, बांसुरीवाले का जन्म हुआ है।

• जानकारी...

लीथियम

लीथियम, एक हल्का और चांदी जैसा दिखने वाला धातु है, जिसे पिछले कुछ सालों में 'सफेद सोना' के रूप में जाना जाने लगा है। यह उपनाम इसे यूं ही नहीं दिया गया है, बल्कि इसके कई जरूरी गुणों और बढ़ती मांग के कारण है। आइए जानते हैं कि आखिर क्यों लीथियम को सफेद सोना कहा जाता है।

लीथियम सभी धातुओं में सबसे हल्का है। इसका घनत्व पानी से थोड़ा अधिक होता है। इसी कारण इसे बैटरी में इस्तेमाल करके बैटरी का वजन कम किया जा सकता है. इसके अलावा लीथियम में ऊर्जा घनत्व बहुत अधिक होता है। इसका मतलब है कि यह कम मात्रा में भी काफी ऊर्जा स्टोर कर सकता है. साथ ही लीथियम अन्य धातुओं की तुलना में कम प्रतिक्रियाशील होता है, जिससे इसे संभालना आसान होता है।

बता दें इलेक्ट्रिक वाहनों में लीथियम-आयन बैटरी का इस्तेमाल होता है। इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती मांग के साथ ही लीथियम की मांग भी बढ़ रही है। साथ ही स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट आदि सभी में लीथियम-आयन बैटरी का इस्तेमाल होता है। इन उपकरणों की बिक्री में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे लीथियम की मांग बढ़ रही है। सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को स्टोर करने के लिए लीथियम-आयन बैटरी का इस्तेमाल किया जाता है। नवीकरणीय ऊर्जा के बढ़ते इस्तेमाल के साथ ही लीथियम की मांग भी बढ़ रही है।

लीथियम को सफेद सोना इसलिए कहा जाता है क्योंकि लीथियम की बढ़ती मांग के कारण इसकी कीमत लगातार बढ़ रही है। यह सोने जितना कीमती तो नहीं है, लेकिन इसकी तुलना सोने से की जाती है। सात ही लीथियम एक दुर्लभ धातु है और इसकी उपलब्धता सीमित है. इसके अलावा लीथियम का उपयोग केवल बैटरी में ही नहीं, बल्कि कई अन्य उद्योगों में भी किया जाता है. जैसे कि ग्लास, सिरेमिक और चिकित्सा.

ग्लोबल मार्केट में एक टन लीथियम की कीमत लगभग 57.36 लाख रुपये है. वहीं विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2050 तक लिथियम की वैश्विक मांग में 500 प्रतिशत तक बढ़ेगी।

• गोनू झा

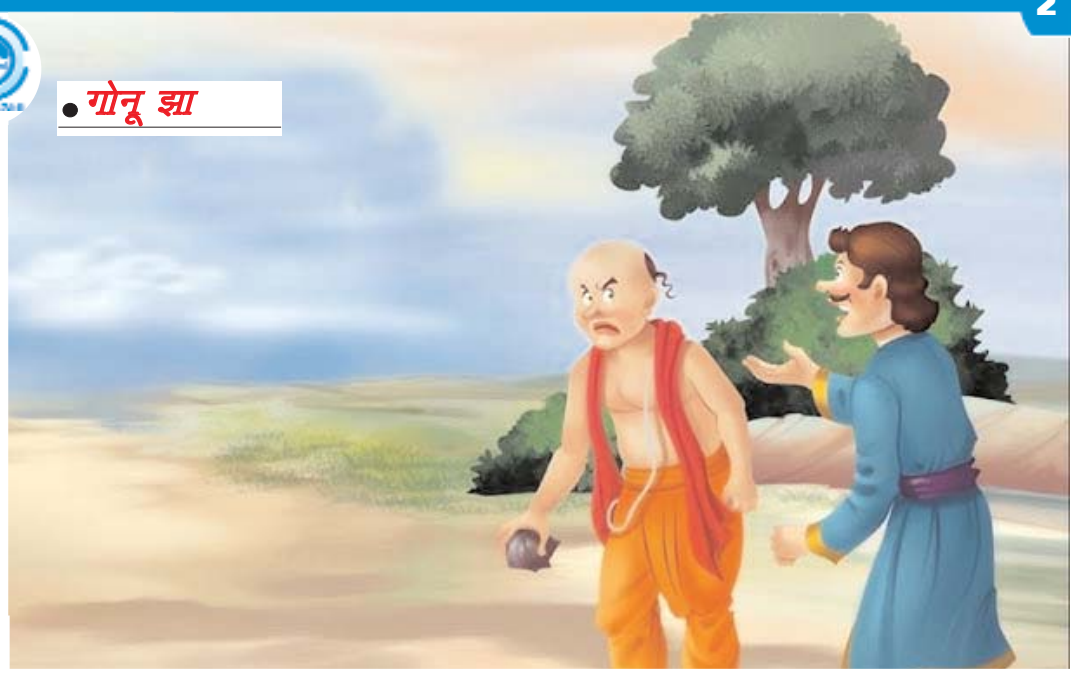

पेड़ पर जेवर

सजा काट रहे चोर संकल्प ले चुके थे कि सजा की अवधि पूरी होने के बाद जैसे ही वे कारागार से बाहर आएंगे, वैसे ही गोनू झा को मजा चखा देंगे।

चोरों की सजा की अवधि भी पूरी हुई और वे कारागार से बाहर भी आ गए। अपने संकल्प के अनुरूप कारागार से निकलकर वे सीधे गोनू झा के आवास की ओर गए और गोनू झा के मकान के आस-पास मँडराने लगे...

गोनू झा अपनी तीव्र बुद्धि के कारण न केवल मिथिला में प्रसिद्ध थे, बल्कि उनकी प्रसिद्धि दूर-दराज तक पहुँच गई थी। उनके वाणी-चातुर्य की सराहना मिथिला नरेश कई बार भरे दरबार में कर चुके थे। गोनू झा के कारनामों की चर्चा नमक-मिर्च लगाकर, उनसे जलने वाले भी लोगों से करते रहते थे। गोनू झा ने अपनी अक्लमन्दी के नए कीर्तिमान स्थापित किए थे। उन कीर्तिमानों में एक था गाँव में चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाना। अपनी बुद्धि के बूते गोनू झा ने गाँव में सक्रिय चोर-गिरोह को न केवल पकड़वाया था, बल्कि उन्हें सजा भी दिलाई थी।

सजा काट रहे चोर संकल्प ले चुके थे कि सजा की अवधि पूरी होने के बाद जैसे ही वे कारागार से बाहर आएंगे, वैसे ही गोनू झा को मजा चखा देंगे। चोरों की सजा की अवधि भी पूरी हुई और वे कारागार से बाहर भी आ गए। अपने संकल्प के अनुरूप कारागार से निकलकर वे सीधे गोनू झा के आवास की ओर गए और गोनू झा के मकान के आस-पास मँडराने लगे।

सूरज डूब चुका था। नीम अँधेरा फैला हुआ था। चोरों के सरदार ने अपने साथियों को बुलाकर कहा- 'तुम लोग घर जाओ। आज मैं अकेले ही गोनू झा के घर में चोरी करूँगा। जो कुछ भी हाथ लगेगा, उसमें तुम सभी को बराबर का हिस्सा मिलेगा।'

चोरों में से एक ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि चोरों के सरदार ने कहा-'कोई अगर-मगर करने की जरूरत नहीं। गोनू झा मेरा शिकार है, उससे मुझे अकेले निपटने दो। तुम लोग अपने-अपने घर जाओ। अपने बाल-बच्चों से मिलो। मुझे अकेला छोड़ दो ताकि मैं गोनू झा से निपटने के लिए कोई तरकीब सोच सकूं। गोनू झा को अपने तिकड़मी दिमाग का बड़ा गुरूर हो गया है, मैं उसे ऐसा सबक सिखाना चाहता हूँ कि वह जिन्दगी भर याद रखे और अपने दिमाग पर इतराना भूल जाए।'

बात सरदार की थी। किसी दूसरे चोर को कुछ भी बोलने की हिम्मत नहीं हुई। सरदार को अकेला छोड़कर शेष सभी चोर अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

चोरों का सरदार गोनू झा के घर की चहारदीवारी के पास चहलकदमी करने लगा। उसने अपने कंधे पर लटक रहा गमछा हाथ में ले लिया और अपने माथे पर लपेट लिया - पगड़ी की तरह। और फिर वहीं टहलने लगा।

गोनू झा दरबार से निकलकर बाजार होते हुए लौट रहे थे। हाथ में एक झोला था जिसमें उन्होंने कुछ सब्जी-भाजी खरीदकर रख ली थी। उनकी पत्नी ने सुबह ही कहा था -'शाम को सब्जी लेते आइएगा। नहीं तो रात को खाने में सब्जी नहीं मिलेगी। अचार-मुरब्बा से ही काम चलाना पड़ेगा... फिर मुझसे कुछ मत कहिएगा।'

गोनू झा जब अपने अहाते की तरफ मुड़ने लगे तो चोरों का सरदार निश्चिन्त भाव से चलता हुआ उनके पास आ गया और बोला -'राम-राम पंडित जी!'

गोनू झा ने उसकी तरफ देखा तो पहचान नहीं पाए कि यह आदमी कौन है, फिर भी औपचारिकतावश उन्होंने जवाब दिया -'राम राम!'

चोरों के सरदार ने कहा-'पंडित जी! आप तो मुझे नहीं पहचानते होंगे लेकिन मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ। आपके पड़ोस के गाँव से आपकी कीर्ति सुनकर आया हूँ। मेरे गाँव में चोरों ने उत्पात मचा रखा है। मैंने सुना है कि आपने अपने गाँव से चोरों का सफाया करा दिया। मुझे कोई तरकीब सुझाइए कि अपने घर में चोरी नहीं होने दूं और अपने गाँव वालों को भी चोरों के प्रकोप से बचने की तरकीबें सुझा सकूं।'

गोनू झा ने जैसे ही चोर की बातें सुनीं तो उनका दिमाग तेज गति से काम करने लगा। आज ही दरबार में उन्होंने चर्चा सुनी थी कि उन्होंने जिन चोरों को पकड़वाया था, आज वे सभी कारागार से रिहा हो गए। इस अजनबी का इस तरह अचानक मिलना और चोरों से बचने की तरकीब पूछना उन्हें सामान्य नहीं लगा। मन में उमड़ रहे सन्देह पर काबू पाने की कोशिश करते हुए गोनू झा ने कहा-'अरे भाई! पड़ोस के गाँव से आए हो तो पड़ोसी हुए। आयँ! हुए कि नहीं? तब बताओ, क्या यह पड़ोसी का व्यवहार है कि दरवाजे पर खड़ा होकर बात करे? आयँ, बोलो! ... तरकीब भी बताएँगे और चोर का इलाज भी। लेकिन पहले तुम चलो। एक आध गिलास दूध-मठ्ठा जो भी घर में होगा, उससे तुम्हारा अतिथि-सत्कार करने दो।' -जारी

• रोचक...

ब्लैक फॉरेस्ट जंगल

जर्मन में श्वार्जवाल्ड के नाम से जाना जाने वाला ब्लैक फॉरेस्ट मनमोहक जंगल लगभग 4,600 वर्ग मील में फैला हुआ है। यह अपने घने और सदाबहार पेड़ों के साथ विविध वन्यजीवन के साथ सुरम्य गांवों और समृद्ध लोककथाओं के लिए मशहूर है। ब्लैक फॉरेस्ट लंबे समय से लकड़ी उद्योग से जुड़ा हुआ है, जो विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए लकड़ी का एक स्थायी स्रोत प्रदान करता है। रोमवासियों ने इस जंगल की पर्वतमाला को 'ब्लैक फॉरेस्ट' नाम दिया था। ऐसा इसलिए था, क्योंकि इस क्षेत्र में घने शंकुधारी पेड़ पाए जाते हैं, जो बहुत गहरे हरे रंग के होते हैं। जब आप इसे देखते हैं तो यह जंगल वास्तव में काला नहीं है, लेकिन रोमवासियों को यह डरावना और अंधेरे से भरा लगा था। क्योंकि स्प्रूस की घनी छतरी के से कोई प्रकाश दिखाई नहीं देता था, इसलिए इसे सिल्वा निग्रा यानी ब्लैक फॉरेस्ट नाम दिया गया था।

• कैनो क्रिस्टल नदी...

कोलंबिया में बहने वाली कैनो क्रिस्टल नदी अपना रंग बदलने के लिए जानी जाती है। दरअसल इस नदी का रंग मैकेरेनिया क्लेविगरा नाम के एक पौधे के कारण भी बदलता है। इस पौधे के पत्ते, तने और फूल अलग-अलग रंगों के होते हैं। जिसके कारण नदी का पानी कई रंगों का दिखता है। यही वजह है कि साल के छह महीने इस नदी का रंग आम नदियों जैसा होता है। वहीं जून से लेकर नवंबर तक इस नदी का पानी पीला, हरा या फिर नीले रंग का नजर आने लगता है।